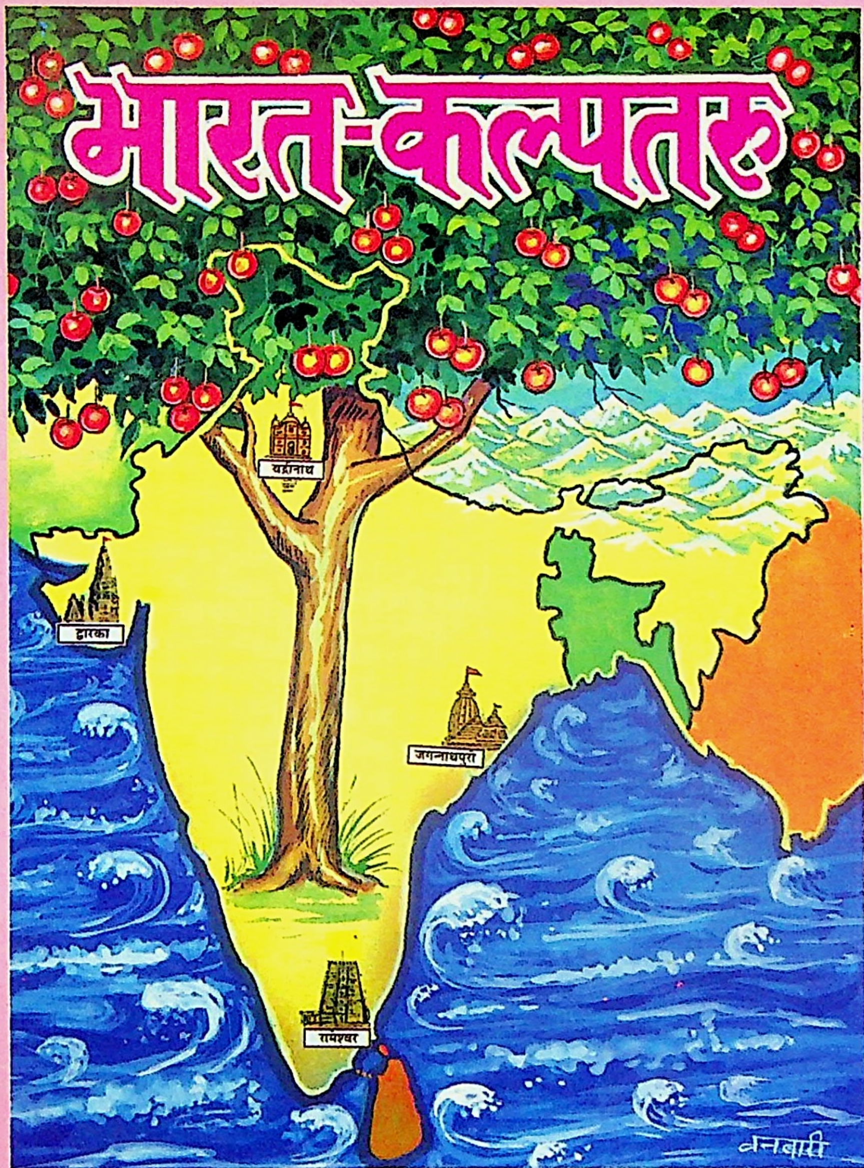
॥ श्री सर्वेश्वरो विजयते ॥

जयतु भारतम् जयतु भारतम्



रचयिता -

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

।। श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ।।

।। जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।



भारत-कल्पतरु



रचयिता :

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

प्रकाशक :

अखिल भारतीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

वन्दे भारत-मातरम्

भारत माता नमन निरन्तर।

अति पावन मन विमल भाव भर, जिन पद पंकज निज मस्तक धर।।

अनुपम दर्शन बुध जन सेवित, शोभित नाना तीर्थ-सरोवर।

"शरण सदा राधासर्वेश्वर" कोटि नमन है पुलकित अन्तर।।



प्राप्ति स्थान :

- **श्रीनिम्बार्क साहित्य संस्थान**
  अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
  निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) राज०

- **श्री 'श्रीजी' बड़ा मन्दिर, प्रताप बाजार**
  वृन्दावन (उ०प्र०)

प्रथमावृत्ति
१०००
वि. सं. २०४५

द्वितीयावृत्ति
२०००

व्यञ्जन द्वादशी-श्रीनारद जयन्ती महोत्सव

वि० सं० २०५५

न्यौछावर :
पन्द्रह रु०

मुद्रक :

श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

ग्रन्थ विमोचन

महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय

डा० श्रीशंकरदयाल शर्मा

के

करकमलों द्वारा

शुभ मिति-ज्येष्ठ शुक्ला १० गंगादशमी बुधवार

वि० सं० २०४६

दिनांक : १४-६-१९८९

समय पूर्वाह्न ११।। बजे

उपराष्ट्रपति भवन-नई दिल्ली

शंकरदयाल शर्मा

१४.६.८९

ग्रन्थ विमोचन—

'भारत-कल्पतरु' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए
महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय

डा० श्रीशङ्करदयाल शर्मा





उप-राष्ट्रपति, भारत
नईदिल्ली
VICE-PRESIDENT
INDIA
NEW DELHI
जुलाई 11, 1989

जगद्‌गुरू श्री निम्बार्काचार्यश्री श्रीजी महाराजकृत
भारत कल्पतरु पुस्तक के प्रति

संदेश

देश जमीन का टुकड़ा भर नहीं होता। वह वहाँ के लोगों के जीवन में रच–बस गया एक जीवित गंध होता है। उस जमीन पर उगी तथा पली–फली संस्कृति से वहां के निवासियों के संस्कार बनते हैं। इसलिए हमारे यहां राष्ट्र की कल्पना एक माता के रूप में की गई है। ऐसी जीवनदायिनी माता की आराधना और प्रशंसा स्वाभाविक ही है।

मुझे प्रसन्नता है कि इस पुस्तक में भारत माता की आराधना के पवित्र स्वर गूंज रहे हैं। विश्वास है कि ये स्वर बच्चों के हृदय में राष्ट्र प्रेम की अनुगूंज भरेंगे।

(शंकर दयाल शर्मा)



कार्यालय : 21497
निवास : 20679
तार : राजसंकबोर्ड

जगमोहन श्रीवास्तव

अध्यक्ष

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर ३०५००१

दिनांक २० जुलाई, ८६

परम आदरणीय श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा विरचित ग्रन्थ ***"भारत-कल्पतरु"*** *के अवलोकन करने का शुभ अवसर मिला। यह ग्रन्थ राष्ट्रभक्ति का अनूठा ग्रन्थ है जिसमें भारत–माता की वन्दना बड़ी भावना से की गई है। वर्तमान काल के प्रति महाराजश्री ने प्रेरणादायी उपदेश भी दिये हैं। मैं पूर्ण विश्वास व्यक्त करता हूँ कि यह ग्रन्थ शिक्षा जगत् में समादरणीय है तथा वर्तमान पीढ़ी को महत्वपूर्ण सन्देश देता है।*

जगमोहन श्रीवास्तव

हरिदेव जोशी
पूर्व मुख्यमन्त्री, राजस्थान सरकार

जोशी फार्म हाऊस
अजमेर रोड,
जयपुर–३०२००६
दूरभाष : ७३२५०

दिनांक ३ जनवरी, १९८९

सर्वेश्वर स्थल से श्रद्धेय जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर 'श्रीजी' महाराज ने अपने देश भारत वर्ष के प्रति अपनी भावनायें प्रकट करते हुए **"भारत कल्पतरु"** लिखी है। मुझे दो तीन बार सर्वेश्वर स्थल सलेमाबाद जाने का अवसर मिला है। श्रद्धेय श्री 'श्रीजी' महाराज ने इस धार्मिक स्थल का ज्यादा से ज्यादा उपयोग लोकहित में हो इस दृष्टि से सामान्य जन के शिक्षण में प्रगति और विचार से कार्य किये हैं जिन्हें देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।

श्री 'श्रीजी' महाराज के धार्मिक विचारों के साथ–साथ जनहित में किये जा रहे कार्यों ने वहाँ नये प्रकार का माहोल पैदा किया है। इस पुस्तक के जरिये उन्होंने न केवल अपनी भावनायें प्रकट की है बल्कि लोक कल्याण हेतु इसमें मोड़ दिया है।

श्री 'श्रीजी' महाराज हमारे श्रद्धा के पात्र हैं उनके स्नेह स्मरण के लिए मैं उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा प्रकट करता हूँ।

हरिदेव जोशी

NAWALKISHOR SHARMA
Member of Parliament
(LOK SABHA)

3, KRISHNA MENON MARG
NEW DELHI - 1 1 0 0 1 1
PHONE : 301 65 99

दिनांक ४–१–८६

"भारत कल्पतरु" को मैंने देखा, पढ़ा और इसके भाव व भाषा को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। भारतीयता से ओत–प्रोत "भारत कल्पतरु" में रचयिता जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य "श्रीजी" महाराज ने भारत महिमा का जो सजीव वर्णन किया है वह आज के बालक, वयस्क, वृद्ध को इसका ज्ञान कराने में सहायक होगा। भारतीयता जिसको हम भूलते जा रहे हैं उसके प्रति प्रतिबद्धता पैदा करने का यह प्रयास सराहनीय है। तीर्थमय भारत का सजीव चित्रण पढ़ने से एक अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है।

श्री "श्रीजी" महाराज का जीवन त्याग, तपस्या व परोपकार के लिये है। देश में रहने वाले भारतीय को यह पुस्तक प्रेरणा देगी ऐसी मेरी आशा है। आशा है इस पुस्तक का शिक्षा जगत् में समुचित उपयोग होगा खासतौर पर छोटे बच्चों की शिक्षा के समय।

नवलकिशोर शर्मा

"भारत कल्पतरु" के भारत माता के प्रति समर्पण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रॉफेसर श्रीरामवली उपाध्याय, कुलपति अजमेर-विश्वविद्यालय का-

उद्बोधन

प्राचीनकाल में आचार्यों ने ही इस देश के सांस्कृतिक स्वरूप को रचा था। समत्व और सहिष्णुता का बोध जगाया था, जो हमारे प्राचीन ग्रन्थों में बहुत सुन्दर शब्दों में इस प्रकार निबद्ध है–

ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं सं नो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे संजनाना उपासते।।

(एक साथ चलो, एक साथ बोलो, तुम सबका मन व ज्ञान एक समान हो, जैसे पहले के विद्वान् देवगण जानते, समझते और सेवन करते हुए प्रभु की उपासना करते रहे हैं।) सबके ह्रदय में समानता की प्रेरक वाणी ही इन शब्दों में विद्यमान है–

ॐ समानी वः आकूतिः समाना ह्रदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति।।

(तुम्हारी संकल्प–शक्ति या विवेचन–शक्ति समान हो, तुम सबके ह्रदय समान हों। तुम्हारा मन व मनन के साधन एक समान हो ताकि तुम्हारा बल, सहनशक्ति और ज्ञान भलीभाँति चमके)

श्रीशंकराचार्य ने ऐसे ही दिव्य भावों को क्रियात्मक रूप देकर इस देश को संगठित किया था। आचार्य–कर्म की सात्विकता और व्यापकता ही इसमें है कि वह लोकजीवन को सत्यान्वेषण की दिशा दे, यह भाव सुदृढ़ करे कि यह पृथ्वी मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ–

पृथिवी माता पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

मुझे प्रसन्नता है कि हमारे आचार्य अपनी वैयक्तिक धर्मसाधना को लोक मंगल की ओर उन्मुख करने के लिए आकृष्ट हो रहे हैं। यह हमारे राष्ट्र के लिए शुभ लक्षण हैं। जगद्‌गुरु शंकराचार्य की भाँति देश में जनसमाज के मध्य जाकर भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार करना

आवश्यक है। निम्बार्कपीठ के आचार्य 'श्रीजी' महाराज ने अपनी पुस्तक **'भारत-कल्पतरु'**, जिसका विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति महोदय ने किया है, में भारतीय संस्कृति के व्यापक तत्त्वों को काव्य के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाने का और भारत भूमि के प्रति देशवासियों में प्रेम और श्रद्धा जगाने का तथा राष्ट्र–भक्ति के लोकतान्त्रिक मूल्यों को जीवन्त वाणी प्रदान करने का जो सहज उपक्रम किया है उसकी वर्तमान समय में बहुत आवश्यकता है।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

के उद्‌घोष ने जैसे अतीत में विश्व और राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधा था, वैसे ही एक सूत्र में बाँधने की भावना आपकी इस पुस्तक में अभिव्यक्त हुई है। राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिए भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार की आवश्यकता आज हमारे विश्वविद्यालयों में सबसे अधिक है क्योंकि हमारी वर्तमान पीढ़ी भौतिक विज्ञान और तर्काश्रित बुद्धिवाद को ही सब कुछ मानकर भारतीय संस्कृति के प्राणतत्त्व आध्यात्मिक को विस्मृत करती जा रही है। आपकी यह **'भारत कल्पतरु'** भारतीयता से ओत–प्रोत है और राष्ट्रीय भावना जगाने वाली है। मैं हिन्दी के विद्वानों से परामर्श करके विचार करूँगा कि इसके पदों को लेकर या इसको सम्पूर्णतः ही कैसे विद्यार्थियों को देवें कि वे राष्ट्रचिन्तन की ओर उन्मुख हों और देश की एकता एवं अखण्डता को सुदृढ़ करें।

आपने इस पुस्तक को 'भारत–माता' को समर्पित करने का मानस बनाया और सभी श्रद्धापूर्ण भावों और पूजा–अर्चना के साथ इसे 'भारत–माता' को समर्पित किया, यह आपकी आध्यात्मिक तपस्या का लोकमंगलोन्मुखी रूप है। वर्तमान समय में देश को आप जैसे आध्यात्मिक आचार्यों की विशेष आवश्यकता है क्योंकि आध्यात्मिकता का राष्ट्रधर्मी रूप ही इस समय देश का मार्ग–दर्शक बन सकता है।

मेरी यह विनम्र मान्यता है कि ज्ञान जब तक आध्यात्मोन्मुख न हो तथा नैतिकता और कलात्मकता के धरातल पर उत्पन्न न हो तब तक वह समाज और देश के लिए खतरा सिद्ध हो सकता है। अन्य विचारक भी यही मानते हैं–Physical efficiency and intellectual alertness are

dangerous if spiritual illiteracy prevails. (शारीरिक कुशलता और बौद्धिक सतर्कता खतरनाक सिद्ध हो सकती है यदि आध्यात्मिक निरक्षरता व्याप्त है।)

मुझे विश्वास है कि पूज्य आचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के इस ग्रन्थ का राष्ट्रव्यापी प्रचार होगा और उनके तपःपूत भावों की यह काव्यमयी वाणी लोगों में, विशेषतः विद्यार्थियों में, भारतीय गौरव, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को दृढ़मूल करने में सार्थक होगी। मेरी कामना है कि यह "भारत कल्पतरु" भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय विचारों के प्रसार में 'कल्पतरु' के तुल्य ही सर्वफलदायी हो। 



❖ "भारत कल्पतरु" का सुखद सौरभ ❖



किसी भी पथिक को सघन वृक्ष की छाया में बैठने से अवश्य शान्ति मिलती है। वह यदि मधुर फलों से परिपूर्ण हो तो शान्ति के साथ तृप्ति भी प्राप्त होती है। पथिक के अन्य भी मनोरथों को जो पूर्ण करता हो, वह ही कल्पतरु कहा जाता है। सम्पूर्ण भारत को जो सुख शान्ति पहुँचाता हो, वह प्रस्तुत **"भारत-कल्पतरु"** अपने में सार्थक है।

आतंकवाद, निर्दयता तस्करता, स्वार्थ परायणता आदि अनेक ऐसे घातक तत्त्व हैं, जिनसे राष्ट्र सदा सन्त्रस्त बना रहता है। दया, परोपकार, बन्धुता, अहिंसा आदि सद्‌गुणों का हृदय में जब तक स्थापन न हो, तब तक उस मानव में क्रियाशीलता व सुख शान्ति का प्रवेश नहीं होता। यह सब कुछ तभी हो सकता है, जब सदाचार आदि गुणों को जीवन में हृदय से सक्रिय रूप दिया जावे।

भारत की महिमा, भारतीयता, भारत की संस्कृति तथा अन्य विशेषताओं का सम्यक् परिज्ञान होने पर ही व्यक्ति सद्‌गुणों की ओर अग्रसर हो सकता है। कर्तव्यनिष्ठा व सर्वजन–बन्धुता होने पर ही देश में सुख–समृद्धि सम्भव हो सकती है। भारत की इन सभी सुधाधाराओं से परिषिञ्चित **"भारत-कल्पतरु"** की छाया एवं उसका सुखद सौरभ राष्ट्र के लिये परम हितावह है।

देश के भावी कर्णधार बालकों के कोमल हृदय में पावन संस्कारों को दृढ़मूल बनाने के लिये शिक्षा–विभाग में इसका विशेष उपयोग नितान्त अपेक्षित है।

विनीत :

रामगोपाल शास्त्री

सेवानिवृत्त–उपनिरीक्षक

संस्कृत शिक्षा–राजस्थान

जयपुर

गीता जयन्ती २०४५

१६ दिसम्बर १९८८ ई०

"भारत कल्पतरु" की सर्व सुखदायी छाया

"भारत–कल्पतरु" अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य–पीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज कृत अनूठी–सद्यःरचना है। रससिद्ध कवि की सुकोमल–सुललित सुमधुर एवं प्रसादपूर्ण वाणी में अभिव्यक्त, अध्यात्मपरक–विमल–भारतीयता तथा सर्वतोमुखी–प्रबल–राष्ट्रीयता के प्रति समर्पित उत्कट–स्वर सुमनस–पाठक को स्वदेश–प्रेम, सदाचार, सहिष्णुता, अहिंसा, विश्व बन्धुत्व, दया– करुणा– परोपकार, शुचिता की सद्भावना में आप्लावित कर देता है।

ग्रन्थ का पूवार्द्ध महिमामयी धर्मप्राण भारत भूमि के पावन एवं अति विलक्षण–गरिमामय प्राकृतिक–सांस्कृतिक–सामाजिक एवं चारित्रिक परिवेश की गीति पदात्मक अभिव्यक्ति से ओत–प्रोत है। सरस भाव और संस्कृतनिष्ठ–परिमार्जित–सरल–भाषा का अद्भुत सामंजस्य, संगीत–संगति, लयात्मक–छन्द विधान, सानुप्रासिक– आलंकारिक– भावानुरूप–शब्दसार्थकता, वातावरण– चित्रांकनता, वर्ण्य–वस्तु– शिल्पावेष्टित बहुज्ञता तथा विषय–वैविध्यपूर्ण उत्कृष्ट–काव्यकला आद्योपान्त दर्शनीय है।

भगवत्क्रीड़ा स्थली, ऋषि–मुनि–मनीषि की तपोभूमि, वीरप्रसविनी, सुरम्य–सुललित–विपुलसम्पदायुक्त–शस्यश्यामला भारत माता विश्ववंद्य तीर्थभूमि हैः–

भारत तीरथ रूप महा है।
देववृन्द-मुनि पुनि-पुनि भारत, वसुन्धरा पर जन्म चहा है।
अतिशय सुन्दर विविध तीर्थ जहँ, अतिपावन यह दरश रहा है।।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, असीम अनूप सुखावहा है।।

भारतमाता के ऐसे दिव्य–स्वरूप के अनुपम प्राकृतिक परिवेश की अलौकिक–अद्वितीय–छटा के स्रष्टा कवि के कलात्मक–पुञ्जभाव भी वन्दनीय हैः–

नमन करो श्रीभारतमाता।
दिव्य हिमालय अभिनव अनुपम, छवि दरशन कर मन हरषाता।।
रतनाकर श्रीमहोदधि सागर, भारतमाता जय जय गाता।
गंगा-यमुना-कृष्णा-सरयू, सरस्वती जल शुभफल दाता।।
वन-उपवन-श्री-सरस माधुरी, ललित लता तरु हृदय सुहाता।

तड़ित प्रभायुत श्यामल जलधर, मंजुल मधुर-सलिल वरषाता।।
नलिन सुशोभित विविध सरोवर, सुभग दरश हित मन अकुलाता।
अतुलित वैभव पावन महिमा, गावत गुणिजन हिय सरसाता।।
कनक रजत मणि माणिक हीरा, आभा अतिशय भव विख्याता।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, वन्दन करते शंकर धाता।।

ऐसी भारतमाता की क्रोड़ में जन्म लेना धन्य है जहाँ का वैदिक ज्ञानार्जन, सांस्कृतिक–आध्यात्मिक–वैभवपूर्ण तीर्थों का दर्शन, विलक्षण–प्रकृति–भ्रमण, जहाँ की ललित–कला, स्थापत्य–शिल्प, संगीत–नृत्य–विद्या, भारतीय आयुर्वेद–विज्ञान तथा प्राचीन– संस्कृति–समन्वित–जनजीवन व सदाचारपूर्ण आतिथ्य असंख्य–विदेशियों के लिए आज भी भारत दर्शन को सतत–लालसा के प्रबल प्रेरक तत्त्व हैं :–

विदेशवासी भारत आते।
विविध राष्ट्र से नर-नारी गन, दरश हेतु वे आतुर पाते।।
अतुलित वैभव ललित कला लखि, भारत की नित महिमा गाते।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुनरपि आने की कह जाते।।

'भारत–वांछा कल्पतरु' है जिसकी छाया शरणागत सुखदशीतल है। प्राचीन 'विश्वनीड़' भारत द्वारा प्रतिपादित विश्वबन्धुत्व, सहिष्णुता–समन्वयता–समता, अहिंसा, सर्वात्मप्रेम–दर्शन आदि की भावना का पुनर्जागरण ही आज सृष्टि को आणविक–सर्वनाश से बचा सकता है, इसी सत्य का उद्घाटन कवि का अभीष्ट है, भारत भूमि का दर्शन–परसन ही जिसका एकमात्र उपाय है।

'भारत–कल्पतरु' के कवि महान् युगद्रष्टा है, शीर्षस्थ धर्माचार्य, चिन्तक–साधक और उपदेष्टा मनीषि के व्रतानुरूप ही अपने यहाँ सर्वनाशी–समसामयिक आणविक–संत्रासदियों से आक्रांत मानवता के परित्राणार्थ कई ओजस्वी उद्बोधन किये हैं। प्रलयंकारी–आणविक–शस्त्रीकरण, मृत्युदायी प्रदूषण, महाविध्वंसकारी–असंतुलित–प्रकृतिदोहन, सर्वात्मधाती सकल–वन्य–सम्पदा–विध्वंसन आदि महासंकटों के प्रति की गई आपकी आकुल–वर्जनाएं विश्वशान्ति, सुख–सम्वृद्धि की शुभचिन्ताओं की परिचायक है :–

(१) अति घातक संहारकर, अणुबम आदिक अस्त्र।
राधासर्वेश्वरशरण, विनिषेध हों सब शस्त्र।।

(२) **सुन्दर वन तरु सम्पदा, सब विधि रक्षण हेतु।**
राधासर्वेश्वरशरण, राजधर्म यह सेतु।।

(३) **विहग मृगादि विविध जीव रक्षा हित अनिवार्य।**
राधासर्वेश्वरशरण, सर्वकार यह कार्य।।

(४) **श्री गंगादिक सरित शुचि रक्षण हित यह कार्य।**
राधासर्वेश्वरशरण, अनुशासक अनिवार्य।।

राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में व्याप्त तस्करता, आतंकवाद, अलगाववाद, युद्धलिप्सा, भ्रष्टाचार, अनाचार, मद्यपान–नशाव्यसन आदि अनेकानेक समसामयिक समस्याओं के समाधानार्थ राष्ट्र नायकों शासकों के प्रति उपदेष्टा कवि ने प्रेरणात्मक–दायित्व–दिशादर्शन भी किया हैः–

(१) **तस्करता का त्याग कर, हिंसा नित्य निवार।**
राधासर्वेश्वरशरण, भ्रष्टाचार विसार।।

(२) **मद्यादि सेवन अवैध, चलचित्रों का त्याग।**
राधासर्वेश्वरशरण, हो दुष्कर्म विराग।।

(३) **भारतवर्ष अखंडता, रक्षाहित हो कार्य।**
राधासर्वेश्वरशरण, यह अतीव अनिवार्य।।

(४) **संघटन करके रहो, सभी दृष्टि से आज।**
राधासर्वेश्वरशरण, सुधरेंगे सब काज।।

मौलिक चिन्तन, प्रेरणादायी–सद्‌गुणवेष्टित– चरित्र–उन्नायक–साहित्य के अभाव एवं पाश्चात्य–अन्धानुकरण से ग्रस्त आज हमारा भारतीय जनजीवन अनेक विपदाओं से पीड़ित हैं। अपनी विश्वविश्रुत संस्कृति–सभ्यता, जीवन पद्धति, रीतिरिवाज, खानपान, रहनसहन की स्वस्थ परम्पराओं, देशानुकूल प्रकृति–सम्मत जीवनचर्याओं, सादा जीवन–उच्चविचार के सुखदायी–व्यावहारिक सिद्धान्तों, कल्याणकारी– निरापद आयुर्वेद–ज्ञान, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह–परोपकार आदि शाश्वत– सत्यों के परित्याग से आज हमारा तन–मन–धन, व्यक्तिगत–सामाजिक जीवन कलुषित और दुःखी है। अतः सर्वजनहिताय की संतोचित भावना से परिपूर्ण कवि–हृदय ने इन्हीं विस्मृतियों का पुनःस्मरण कराया है। दोहा–छन्द और सरल भाषा में की गई अभिव्यञ्जनायें कितनी सार्थक और उपादेय हैः–

(१) **सकल रोगहर निम्ब है, आयुर्वेद प्रमान।**
राधासर्वेश्वरशरण, महिमा परम महान।।

(२) **पञ्चगव्य सेवन करो, गोमय घृत गोमूत्र।**
राधासर्वेश्वरशरण, दधि-पय अनुपम सूत्र।।

(३) **श्रीतुलसी भवरोगहर, अतुलित महिमा जान।**
राधासर्वेश्वरशरण, प्रभु प्रसाद सनमान।।

(४) **आमिष भोजन अभक्ष्य है, वह अनर्थ का मूल।**
राधासर्वेश्वरशरण, तज दो मत कर भूल।।

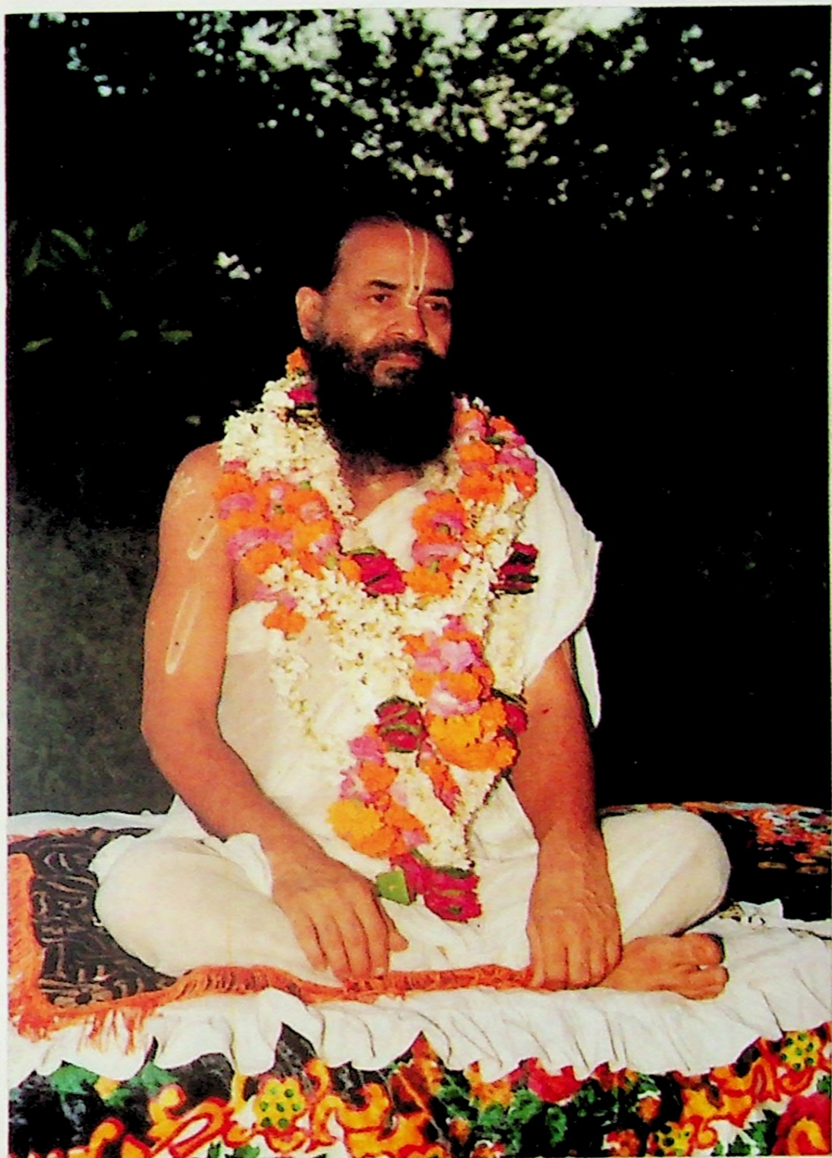
"भारत–कल्पतरु" में ग्रथित ऋतु–श्रुतिपेशल, सार्थक–सूक्ति– दोहावली 'गागर में सागरवत्' गुरु–ज्ञान–गुणादि मंडित, सदाचार–विमल –चारित्र्य की सम्मोहिनी–संहिता है। यह ग्रन्थ भक्ति–भाव, राष्ट्रप्रेम और सूक्ति–सन्देशों का त्रिवेणी–संगम है। "भारत–कल्पतरु" की सर्वसुखद, सुभग–शीतल, विश्व–मन–विमोहक–छाया, कलिमल हारिणी और सर्वरस–विस्तारिणी है। समसामयिक–सर्वकल्याणकारी, मंगलदायक `–जन–मन प्रबोधक, रसपीयूषवर्षिणी, 'भारत–कल्पतरु' शुभनामांकित यह सारगर्भित गुरुवाणी श्रीमुख–वचनों का पावन प्रसाद है, जिसके कलात्मक–कलेवर में निहित भावाभिभूत प्रेरणादायी शुभसन्देश स्तुत्य, समादरणीय, ग्रहणीय और वन्दनीय है।

विनीतः

डॉ० रामप्रसाद शर्मा
एम्०ए०पी०एच्०डी०
प्रवक्ता-
राजकीय–महाविद्यालय
किशनगढ़ (राज०)

गीता जयन्ती
मार्गशीर्ष शु० ११ सोम०सं० २०४५
दि० १६–१२–१६८८

ग्रन्थ रचयिता–



अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरू श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री "श्रीजी"

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

अखिल भारतीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

(सलेमाबाद) अजमेर राजस्थान

श्रीसर्वेश्वरो जयति

ग्रन्थ प्रणेता-

आचार्यश्री का संक्षिप्त-परिचय

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) का जन्म निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में ही विक्रम संवत् १९८६ वैशाख शुक्ला प्रतिपदा शुक्रवार दि० १० मई सन् १९२९ में उत्तम गौड़ ब्राह्मण बंश के पवित्र परिवार में प्रातः ५ बजकर ५४ मिनट पर हुआ था। पिताश्री का नाम पं० श्रीरामनाथ शर्मा गौड़ और माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) था। आपश्री का बाल्यकालीन नाम रतनलाल शर्मा गौड़ था। बाल्यकाल से ही आपकी प्रवृत्ति एवं अभिरुचि भगवद्भक्ति की ओर देख संस्कारी बालक जान अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज ने आपके माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त कर वि० सं० १९९७ आषाढ़ शुक्ला द्वितीया (श्रीरथयात्रा) दि० ७ जुलाई सन् १९४० के परम पावन शुभ दिन में पञ्चसंस्कार युक्त विरक्त वैष्णवी दीक्षा प्रदान कर ११ वर्ष की अवस्था में ही युवराज पद पर नियुक्त कर लिया। तदनन्तर पीठ में ही विद्याध्ययन में संलग्न रहे। वि० सं० २००० में अपने श्रीगुरुदेव के गोलोकधाम पधारने पर ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को आप १४ वर्ष की अवस्था में ही अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन हो गये। पश्चात् श्रीवृन्दावनधाम में निवास करते हुये व्याकरण-न्याय तथा वेदान्त आदि का अध्ययन किया। आपने अपने कार्यकाल में भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित भारत के विभिन्न अञ्चलों एवं पुण्यमय क्षेत्रों-तीर्थों की कई बार यात्रायें कर धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

साथ ही आचार्यपीठ एवं पीठ से सम्बन्धित कई एक स्थानों का जीर्णोद्धार तथा सुप्रबन्धादि से समुन्नति की। आचार्यपीठ में श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय एवं श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय आदि की संस्थापना, संचालन, छात्रों के लिये छात्रावास, भोजन, वस्त्रादि की सुव्यवस्था पीठ की ओर से ही की। बड़े-बड़े आयोजन जैसे अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन जिसके लिये "न भूतो न भविष्यति" ऐसा कहा जाता है। आपने वि० सं० २०१३ में "श्रीनिम्बार्क स्पेशल ट्रेन" से भक्तजनों के साथ तीन धाम सप्तपुरी की यात्रा और वि० सं० २०२६ में लगभग ३-४

हजार सन्तभक्तजनों के साथ व्रज चोरासी कोसीय पद यात्रा भी की। आपश्री के निर्देशन में प्रत्येकमहाकुम्भ पर्वों पर "श्रीनिम्बार्कनगर" का समायोजन भी महत्वपूर्ण है।

श्रीनिम्बार्क भगवान् की तपःस्थली नीमगांव का श्रीनिम्बार्क-राधाकृष्णबिहारीजी का नव-निर्मित विशाल मन्दिर तो सदा सर्वदा के लिये आपकी अमर कीर्ति का द्योतक ही बना रहेगा। इस प्रकार आपके कार्यकाल में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की सर्वतोमुखी समुन्नति हुई है।

आपके संरक्षकत्व एवं संचालकत्व में दो धार्मिक पत्र भी प्रकाशित होते हैं। एक मासिक पत्र "श्रीसर्वेश्वर" और पाक्षिक-पत्र "श्रीनिम्बार्क"। प्रत्येक तीसरे वर्ष पुरुषोत्तम मासीय आयोजन भी वृहद् रूप से मनाया जाता है। तात्पर्य यह है कि आपके निर्देशन में "नित्योत्सवै र्मन्दिरम्" वाली सदुक्ति चरितार्थ हो रही है।

आपके द्वारा अनेक धार्मिक लोकोपयोगी ग्रन्थों की रचना हुई है, जिनका नामोल्लेख प्रस्तुत ग्रन्थ के मुखपृष्ठ के चतुर्थ पृष्ठ पर दिया गया है।

आपके द्वारा निर्मित 'भारत-भारती-वैभवम्' नामक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है, जिसमें भारतवर्ष एवं भारती (संस्कृत) की संस्कृत पदों में महती महिमा का दिग्दर्शन अवलोकनीय है, जिसका सांस्कृतिक जगत् ने भूयोभूय यशोगान किया है।

ठीक इसी प्रकार इस पुस्तक "भारत-कल्पतरु" नामक पुस्तक में भी हिन्दी के भावपूर्ण मधुर पदों में भारत की महती महिमा का दिग्दर्शन कराया गया है-साथ ही हिन्दी भाषा के दोहों में सभी साधारण जनों के हितार्थ शिक्षा का अपूर्व परिज्ञान निहित है।

वस्तुतः यह ग्रन्थ देश प्रेमियों के लिये तथा साधारणजनों में देश प्रेम की भावना जागृत करने के लिये परमोपयोगी सिद्ध होगा।

अतएव आपश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में जितना भी कहा जाय अत्यल्प हैं।

निवेदक :

निम्बार्क भूषण **पं० गोविन्ददास 'सन्त'**

धर्मशास्त्री, द्वैवाद्वैव विशारद, पुराणतीर्थ

प्रधान सम्पादक-श्रीनिम्बार्क

भारत-स्वरूप

कल्पायुषां स्थानजयात्पुनर्भवात्
क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।
क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्विनः
सन्यस्य संयान्त्यभयं पदं हरेः।।

(श्रीमद्भागवत स्क० ५ अ० १६ श्लोक २३)

(स्वर्गादिक तो क्या—जहाँ निवास करने वाले देवगणों का एक—एक कल्प का आयुर्मान है परन्तु जिस लोक से इस भवाटवी में आना पड़ता है ऐसे ब्रह्मलोक प्रभृति लोकों की अपेक्षा भारत की पुण्य वसुधा पर अल्पायु रूप में जन्म धारण करना सुन्दर है। कारण उत्तम पुरुष एक क्षण मात्र में ही अपने भौतिक शरीर से सम्पादित कर्म श्रीहरि के समर्पण करके उनका निर्भय पद पाने में समर्थ हो जाता है)

भारतवर्ष की अनुपम महिमा, अनुपम माहात्म्य, अनुपम महत्व, अनुपम स्वरूप, वेद—पुराण—स्मृति—सूत्र—तन्त्र—महाभारत—श्रीमद्भागवत रामायण प्रभृति संस्कृत वाङ्मय ग्रन्थों एवं हिन्दी—व्रजभाषा साहित्य तथा भारत की विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं के समृद्ध साहित्य में विपुलरूप से परिवर्णित हुआ है।

भारत के परम पावन सुरम्य धराधाम पर अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधिपति, क्षराक्षरातीत, जगज्जन्मादिहेतु, कुर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थ, सर्वनियन्ता, सर्वान्तरात्मा, सर्वाधार, परात्पर, परब्रह्म भगवान् श्रीसर्वेश्वर स्वयं समय—समय पर "**संभवामि युगे युगे**" श्रीमद्भगवद्गीतोक्त इस वचनानुसार अवतरित होकर भारत की इस सुपावन अवनि को समलंकृत कर अनादिवैदिक सनातन धर्म का प्रतिष्ठापन एवं अत्याचारियों का दमन और सन्त—गो—विप्र का, दीन—दुःखियों का परित्राण करते हैं।

भारतवर्ष परम पवित्र, परमदिव्य, परमसमृद्धिशाली परम महनीय, परम मूर्द्धन्यतम अनुपम अद्भुत देश है। यह अपनी अतिशय असीम गरिमा से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करता है। इसकी पुनीत क्रोड़ में अपरिमित अनुपम सुख—वैभव, अजस्र शान्ति, सेवा—सद्भाव, बन्धुत्व, आत्मीयता, अहिंसा, सदाचार, सच्चारित्र्य, सद्विवेक, सुविचार, सत्य, न्याय, निष्ठा, अतस्करता,

अध्यात्मचिन्तन, सात्विकता आदि अनिर्वचनीय अतुलित उत्तमोत्तम गुणगण सुप्रतिष्ठित हैं। यहाँ के पुण्यश्लोक ऋषि–मुनि–यति–योगी–तपस्वी–परिव्राट् एवं जगद्गुरु–धर्माचार्य, धीर–वीर, मेधावी विद्वज्जन–सन्त–महात्मा–श्रद्धालु प्रज्ञावान् पुरुष तथा वहाँ की पतिव्रता भगवद्भक्तिपरायण वीरागंना ललनायें विश्व प्रसिद्ध रही हैं। इसी प्रकार यहाँ के सेवाभक्तिनिष्ठ स्वाध्यायनिरत उत्तम मेधावी विद्याव्रती विद्यार्थीवृन्द भी आदर्शरूप में सर्वदा प्रख्यात रहे हैं।

भारत की यह अत्यन्त सुन्दर पवित्र वसुन्धरा वैभव–कला नानाविध पदार्थ–ज्ञान–विज्ञान इत्यादि अगणित विविध सम्पदाओं में सर्वदा सर्वाग्रगण्य रही है, जिसका अत्यन्त मनोहारी वर्णन श्रीमद्भागवत के इन वचनों से अनुभव करें–

"भारतेऽपि वर्षे भगवान्नरनारायणाख्य आकल्पान्तमुपचित धर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्योपशमोपरमात्मोपलम्भनमनुग्रहायात्मवतामनुकम्पया तपोऽव्यक्तगतिश्चरति" अर्थात् भारतवर्ष में भगवान् स्वयं नर– नारायणरूप से नियम–संयम परायण भक्तों पर अनुकम्पार्थ अपने अव्यक्त स्वरूप में कल्पान्त पर्यन्त तपस्या करते हैं और उनकी इस तपश्चर्या से धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, शान्ति तथा उपरति की क्रमशः अधिकाधिक वृद्धि होकर फिर अन्त में आत्मरूप की सम्प्राप्ति होती है।

वस्तुतः भारत का यह विलक्षण महत्व कितना मननीय है। इसी प्रकार भारत के परमोच्च वैभव का दर्शन भी श्रीमद्भागवत की इन पंक्तियों में अवलोकनीय है–**"भारतेऽप्यस्मिन् बर्षे सरिच्छैलाः सन्ति बहवो मलयो मंगलप्रस्थो मैनाकस्त्रिकूट ऋषभः कूटकः कोल्लकः सह्यो देवगिरि ऋष्यमूकः श्रीशैलो वेकंटो महेन्द्रो वारिधारो विन्ध्यः शुक्तिमानृक्षगिरिः पारियात्रो द्रोणश्चित्रकूटो गोवर्धनो रैवतकः कुकुभो नीलो गोकामुख इन्द्रकीलः कामगिरिति चान्ये च शतसहस्रशः शैलास्तेषां नितम्बप्रभवा नदा नद्यश्च सन्त्यसंख्याताः। एतासामपोभारत्यः प्रजा नामभिरेव पुनन्तीनामात्मना चोपस्पृशन्ति"**

अर्थात् भारतवर्ष में अनेक पर्वत तथा नदियां हैं, यथा मलय, मंगलप्रस्थ, मैनाक, त्रिकूट, ऋषभ, कूटक, कोल्लक, सह्य, देवगिरि, ऋष्यमूक, श्रीशैल, वेंकट, महेन्द्र, वारिधार, विन्ध्य, शुक्तिमान्, ऋक्षगिरि, पारियात्र, द्रोण, चित्रकूट, गोवर्धन, रैवतक, कुकुभ, नील, गोकामुख, इन्द्रकील एवं

कामगिरि प्रभृति और भी सैकड़ों, हजारों पर्वत हैं, इनके तटीय भाग से प्रवाहित नद एवं नदियां भी असंख्य रूप से विद्यमान हैं। ये सभी नदियां अपने नाम से ही प्राणी को पावन बना देती है तथा भारत की प्रजा इनके जल में स्नानादिक करती है।

वस्तुतः भारत की इस अत्यन्त रमणीय धरणी पर शोभायमान इन पावन पर्वत समूह का वर्णन कितना मोहक है। इसी प्रकार अग्रिम पंक्तियों में परम पुण्यसलिला इन दिव्य नद-नदियों एवं चारु चमत्कृति पूर्ण विविध वैभव का प्रतिपादन विलक्षण है किन्तु विस्तारभय से यहाँ केवल संकेत मात्र ही दिग्दर्शन कराया गया है।

परन्तु विस्मय एवं विचार तब होता है कि ऐसे परम पावनतम भारतवर्ष में साम्प्रतिक समय अतीत का दिव्य आदर्श-गौरव आदि सभी कुछ विस्मृत कर विविध विषमता, अविवेक, अनाचार, हिंसा, उपद्रव आदि नाना अनर्थो का प्राबल्य दृष्टिगत हो रहा हो यह भारत की पवित्र प्रतिष्ठा में महान् अन्तराय है। अनेक अकल्पनीय विकट संकट, दुर्घटना इत्यादि अशान्तिपूर्ण कालचक्र का प्रबल झञ्झावात नितान्त चिन्तनीय एवं सर्वतोभावेन निराकरणीय है।

ऐसी विषम एवं विपरीत अवस्था में स्वस्थ-साहित्य का अनुशीलन सद्शिक्षा का प्रचार-प्रसार आदि सर्वाङ्गतया परम अपेक्षित है। प्रमुखतया इसी उद्देश्य से श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अहैतुकी अनुकम्पा एवं प्रेरणानुसार लघुकलेवर रूप यह ग्रन्थ प्रकाशित होकर आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसके मनन करने पर यदि किसी का भी हित हुआ तो प्रस्तुत ग्रन्थ की उपादेयता सार्थक होगी।

अन्त में अनन्तकल्याणगुणगणनिलय अनुग्रहविग्रह भगवान् श्रीसर्वेश्वर श्रीराधामाधव से सर्वजनहिताय सार्वकालिक-कल्याण की मंगलमयी अभिकामना करते हुए भारतवर्ष की सर्वतोमुखी अभिवृद्धि, प्रतिष्ठा, गौरव, स्वरूप, सुख-शान्ति की पुनः पुनः अभिवांछा करते हैं।

सर्वजनश्रेयस्कामः-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

।। श्रीसर्वेश्वरो विजयते।।

वन्दे भारतमातरम् वन्दे भारतमातरम्

समर्पण

भारतमाता अनवरत मनसा कोटि प्रणाम ।
सादर **भारत-कल्पतरु** अर्पित अभिनव नाम।।



समपर्कः
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य



भारताभिनन्दन



भारतवर्ष महान् है, विदित सकल संसार।
'राधासर्वेश्वरशरण' वन्दन बारम्बार।।१।।

निखिल शास्त्र की गर्जना, भारत परम पुनीत।
'राधासर्वेश्वरशरण' गावत गुणिजन गीत।।२।।

भारत पावन देश है, गोविन्द-गोधन क्षेत्र।
'राधासर्वेश्वरशरण' दर्शन कर भर नेत्र।।३।।

भारत सेवा परम धर्म, जीवन यह कर्तव्य।
'राधासर्वेश्वरशरण' सात्त्विक पथ गन्तव्य।।४।।

भारतवसुधा अहर्निश, नमन करो धर ध्यान।
'राधासर्वेश्वरशरण' पावत सुख-सम्मान।।५।।

भारत है भवरोग हर, जगद्गुरु हरिधाम।
'राधासर्वेश्वरशरण' जय जय हो अविराम।।६।।

भारत अविरल अभिनन्दन, करते हम गुण गान।
'राधासर्वेश्वरशरण' अभिवांछित वरदान।।७।।

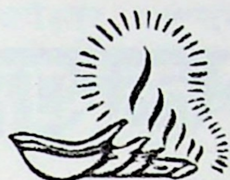
श्रीमद्भारत-अभिनन्दन, करते विधि-शिव-शेष।
'राधासर्वेश्वरशरण' ऋषि-मुनि-मनुज अशेष।।८।।



❖ विषय-सूची ❖



मंगलाचरण



सुभगसर्वसुरेश्वरमच्युतं परमनिम्बदिवाकरदेशिकम्।
निजगुरुं प्रणिपत्य च चेतसा मधुरसर्वहितावहमद्भुतम्।।
अभयदं नितरां विविधात्मकं सकलसौख्यकरं फलदं परम्।
विरचयामि यथामति भक्तिदं रुचिरभारतकल्पतरुं शुभम्।।



।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री "श्रीजी"

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विरचित-

भारत-कल्पतरु

भारत महिमा-

१

जय जय बोलो भारत वसुधा।
शस्य श्यामला गंगजल विमला, कोटिचन्द्रसम शीतल अतुला।।
गोरस भरिता सुरगण गीता, विलसत अनुपम निर्मल प्रभुता।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुनि पुनि बोलो जय जय बहुधा।।

२

भारत वसुधा नमन करो सब।
श्रद्धा सुमन शुचि भाव हृदय भर, भाल समंजुल अरपन कर अब।।
सकल मनोरथ सतत प्रपूरक, इष्ट यही है मन निश्चल जब।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पावो निरभय पद अविचल तब।।

३

नमन करो श्रीभारत माता।
दिव्य हिमालय अभिनव अनुपम, छवि दरशन कर मन हरषाता।।
रतनाकर श्रीमहोदधि सागर, भारत माता जय जय गाता।
गंगा-यमुना-कृष्णा-सरयू, सरस्वती जल शुभ फल दाता।।
वन-उपवन-श्री सरस माधुरी, ललित लता तरु हृदय सुहाता।

तडित प्रभायुत श्यामल जलधर, मंजुल मधुर सलिल वरषाता।।
नलिन सुशोभित विविध सरोवर, सुभग दरश हित मन अकुलाता।
अतुलित वैभव पावन महिमा, गावत गुणिजन हिय सरसाता।।
कनक-रजत-मणि-माणिक-हीरा, आभा अतिशय भव विख्याता।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, वन्दन करते शंकर-धाता।।

४

भाव भरो मन भारत भूमी
मन, वच, क्रम विधि भगति भाव भर, सेवा व्रत ले निज मन झूमी।।
यही तपस्या यही यज्ञ है, देश हित विचरो सरवस हूमी।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, शुद्धभाव की संगम भूमी।

५

भारत वास सदा सुखदाई।
बहुविध तीरथ धाम यहीं पर, फिर क्यों धावत देश पराई।।
निरमल गंगा-यमुना-सरयू, धारा अविरल बहत भराई।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, विमल सुयश अति नहिं वरणाई।।

६

भारत आरत आश्रय दाता।
जो जन जीवन परम दुःखी है, भारत आवत अति हरषाता।।
श्रीहरि भगति साधु संग पाकर, जीवन सफल सदा सुख पाता।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भारत सुमिरत शारद-धाता।।

७

भारतवर्ष हमारा देश।
हम नित गावैं मन हरषावैं, सुभग हमारा सात्विक वेश।।
सदा इसी की जय जय बोलैं, वारहिं तन, मन, विभव अशेष।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जन-जन हो सद-भाव निवेश।।

८

अध्यात्मरूप यह भारतवर्ष।
षड् दर्शन की गभीर चर्चा, कर कर बुध जन वांछत हर्ष।।
भगवद्गीता देती प्रतिपल, ज्ञान, कर्म, हरि-भगति प्रकर्ष।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सतत वास की हो अभितर्ष।।

९

भजो निरन्तर भारत मन में।
यह अवसर बडभागी पावे, इस धरणी के नव नव वन में।।
अतुलित गरिमा निगम-मंत्र रिषि, मुनि जन गावैं अनत गगन में।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भव बन्धन नश जात पलन में।।

१०

भारत को हम सदा निहारे।
विधिवत इसका अरचन वन्दन, रक्षण हित सब कार्य विसारे।।
सकल रूप से अखंड भारत, शुभ सेवा में समय वितारे।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, तन अरपित कर करम निभारे।।

११

गावो गावो भारत धरणी, जिसकी महिमा महान है।
राम-कृष्ण की अवतार मही, जिसका शास्त्र प्रमान है।।
वेद ऋचायें पुराण शास्त्र भी, सस्वर गाते समान है।
रिषी-मुनीश्वर महामनीषी, करते महिमा बखान है।।
सुरवृन्द सदा इक्छुक रहते, हम वास करें सम्मान है।
वीर वरों की यह शुभ भूमी, कलाविदों की खान है।।
शरणागत जन सादर स्वागत, निवास यहीं आव्हान है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह भारत संविधान है।।

१२

भारत गौरव वसुन्धरा है।
पावन इसकी रज में विधि-शिव, होत विलुंठित अमित वरा है।।
पतिव्रता-ललना व्रत-तप से, आदर्श बनी यह परम्परा है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, स्मरण करो सब वही धरा है।।

१३

भारत नाम महा सुखदाई।
नाम उचारत भार हरत है, मिलै सुख-सम्पति जब शरणाई।।
हिमगिरि आभा शोभित अनुपम, जलनिधि सुन्दर तरंग महाई।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भारत दरशन मन ललचाई।

१४

भारत वांछा-कल्पतरूवर।
वांछित शुभ फल सतत प्रदाता, आरति हरता पातक गुरुतर।।
पिपासु भावुक जन मन पूरक, मणि-मुक्ताफल बरषत सुन्दर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भारत पूजहिं विधिवत ध्याकर।।

१५

सकल मनोरथ दाता भारत।
सदा सर्वदा आगत रक्षक, विपुल सम्पदा देत अनारत।।
विविध रतन अरु कनक रजत प्रिय, वितरत भेषज सकल पदारत।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दान परायन विपद निवारत।।

१६

भारत प्रतिपल जनहित वरषत।
सकल पदारथ अभिनव वैभव, अभिवांछित-वर-अनुदिन परसत।।
सुखमय साधन ललित कलावलि, विश्व प्रतिष्ठित अविरल हरषत।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भारत नव छवि रवि इव दरशत।।

१७

भारत में नर जनम भला है।
श्रीसर्वेश्वर परम कृपा से, मनुज-जनम का भाग फला है।।
बहु वृन्दारक नित ललचाते, उनको अवसर सतत टला है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सुन्दरतम भारत अचला है।।

१८

भारत भव का राष्ट्र प्रमुख है।
सकल विश्व के राष्ट्र मात्र का, घोष यही हम नत अभिमुख है।
सब में इस भारत की गरिमा, सर्वोपरि यह अभिनव सुख है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भारत महि पर कभी न दुःख है।

१६

भारत हमको नित ही भावे।
इस धरणी पर नर वपु पाकर, बार बार तन मन हरषावे।।
पर्वत माला बहु सरितायें, अवलोकन कर चित सरसावे।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, खग-कुल-कलरव रस बरसावे।

२०

विदेश वासी भारत आते।
विविध राष्ट्र से नर-नारी गन, दरश हेतु वे आतुर पाते।।
अतुलित वैभव ललित कला लखि, भारत की नित महिमा गाते।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुनरपि आने की कह जाते।।

२१

आज भलो दिन भारत जनमें।
प्रभू कृपा तब यह नर तन है, नहिं नानाविध तप साधन में।।
पाकर नर तन हरि गुन गावो, सार इसी में नहिं बातन में।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, परम लाभ प्रभु आराधन में।।

२२

भारत वसुधा परम मनोहर।
सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग, आवत जावत सहज अधिकतर।।
षड्रितु सुखद विविध महोत्सव, दरशन पावन अतिशय सुन्दर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुण्य भूमि की शुभ छवि रुचिकर।।

२३

भारत ही का वास करो नित।
परम सुपावन भारत अवनी, सुरगन मुनिजन रिषिवर सेवित।।
तीर्थमयी यह अति सुखदायक, श्रीहरिपादाम्बुजपरिचिन्हित।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, चित्त निरन्तर परम विमोहित।

२४

भारत श्रीसर्वेश्वरधाम।
सतत विराजत भारत धरणी, सदा मुदित प्रभु अति अभिराम।।
विहरत श्रीहरि यहाँ निरन्तर, नलिन विलोचन श्याम-बलराम।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सकल मनोरथ पूरण काम।।

२५

भजो भजो श्रीभारतवसुधा, भजो भजो पुनि मुदमन होकर।
इष्ट यही है धाम हमारा, सदा समरपित भाव संजोकर।।
विचरत अविरल धीर-वीर-रिषि, योगी-यति-मुनि दरशन पाते।
मातृभूमि है अनुपम महिमा, सुर गन हरषित प्रतिपल गाते।।
गोधन-सेवाश्रीहरिमन्दिर, दरशन पाकर जनम सफल है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भारत धरणी नहिं निष्फल है।।

२६

जय जय भारत जय जय बोलो।
मनसा, वाचा, ज्ञान, कर्मणा, नाना विधि से पावन होलो।।

अविरल निजमुख जय जय करके, अपना सरवस तन मन धोलो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जयति सदा जय नयन भिगोलो।।

२७

भारत अपना देश महा है।
निखिल विश्व में सर्वोपरि है, राष्ट्र-जगदगुरु सदा रहा है।।
असीम महिमा वैभव इसका, नहि अब तक अस थाह गहा है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रौतधर्म का धार बहा है।।

२८

मंगलरूप मनोहर भारत।
महापुण्यमय मंजुल मोहक, मणिमय मुनिमन मुदित अनारत।।
जहाँ भागवत भगवद गीता, आरत जन के ताप निवारत।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, वन्दौं प्रतिपल पल न विसारत।।

२९

भारत देश परम सुखदाई।
विविध विभव प्रिय विपुल प्रसाधन, अवलोकन कर सब हरषाई।।
चित्र-विचित्र छवि दरशन कारन, पुनि-पुनि आवत देश पराई।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सदा वसो तव मन सरसाई।।

३०

ध्यान करो श्रीभारतमाता।
शुद्ध भाव युत सात्विक मन से, शुभ चिन्तन से प्रिय फल पाता।।
भौतिक निज सुख वंचित होकर, सेवा-व्रत लो चित सरसाता।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अस अभिवांछा हित मन-अकुलाता।।

३१

भारत सुषमा शीतल दाई।
विविध-विपत्ति बहुविध-व्याधि, करत वास ही ध्रुव विरमाई।।

सात्विकता अरु सुभग सरसता, कण-कण में वह अमित वसाई।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, परम शान्ति-सुख-श्री-वरदाई।।

३२

भारत, हरता भार सभी का।
जे जिय श्रद्धा-सुमन भावना, आवत ही दुख जात कभी का।।
निज स्वारथ तज देश-निष्ठ हो, संकट टरता तुरत अभी का।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सफल सुकारज आज तभी का।।

३३

जय भारत जय जय जय भारत।
सदा इसी की जय जय बोलें, दे दे तारी कभी न हारत।।
मंजुल स्वर भर परम भाव धर, जय जय जय हो सतत उचारत।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, कर ऊपर कर जय संचारत।।

३४

भजो भजो श्रीभगवत-भारत।
प्रातकाल प्रिय प्रतिदिन भारत, अवनि नमन कर प्रभु मन धारत।।
श्रुति आज्ञा व्रत जप तप तीरथ, शुद्ध भाव युत हो अनुपालत।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अनुदिन पावो सकल पदारत।।

३५

भारत हिन्दुस्तान महान।
कोटि-कोटि जन निवसत भारत, जलचर नभचर अगनित जान।।
विभव अनूपम ललित कलाकृति, गोधन दरशन पशुधन खान।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पावत सब ही सुख सनमान।।

३६

भारत प्रिय ध्वज प्रभा मनोहर।
त्रिविध रंग शुभ परम सुशोभित, पीत-श्वेत-हरिताभ दिव्यतर।

पीत-महाबल धवल-शान्ति सुख, हरित-धरातल द्योतक सुन्दर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भारत ध्वज नित शीष नमन कर।

३७

शुभ शान्तिमय श्रीभारतधाम।
सात्विक जीवन त्याग भावना, परम सुलभ अविचल विसराम।
भगवद गीता श्रीमुखवाणी, वरष रही है वह अविराम।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, हरि गुण गावो सुख परिणाम।।

३८

भारत सेवो सात्विक मन से।
सब विधि सेवा शुद्ध भाव युत, करो निरन्तर तन, मन, धन से।।
ध्यान, ज्ञान अरु मान इसीका, गान इसीका हो प्रतिजन से।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, हित है सब का नित्य नमन से।।

३९

भारत हमारा सुन्दर देश।
जिसकी सुखमय शुभ धरणी पर, विविध द्रुमावलि कठिन प्रवेश।।
चञ्चल चतुर चित्र-विचित्र प्रिय, खग-मृग विहरत सतत अशेष।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अविरल वरषत सुख सन्देश।।

४०

भारत धरणी अतिशय सुन्दर।
सदा इसी के सुखद अंक में, वास करो दरशन हरि मन्दर।।
सरस ललित अति वन-उपवन हैं, विविध नगर छवि शोभित अन्दर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, राजत हिमगिरि सुभग समन्दर।।

तीर्थमय भारत

४१

भारत तीरथ धाम धरा है।
पूरव श्रीजगदीशपुरी धाम, पश्चिम द्वारका चारुतरा है।।
उत्तर वदरीनाथ विराजित, दक्षिण रामेश्वर प्रवरा है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीहरिलीलाधाम भरा है।।

४२

शोभित सात पुरी श्रीभारत।
अयोध्या-मथुरा-श्रीहरिद्वार, काशी-कांची कष्ट निवारत।
पुरी अवन्तिका दरश द्वारका, मंगल अनुपम नाम उचारत।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, वास भलो अस धीर विचारत।।

४३

भारत सीमा दरशन सुन्दर।
उत्तर हिमगिरि दक्षिण शोभित, कन्याकुमारी मंजुल अघहर।।
पूरव श्रीजगदीशपुरी है, पश्चिम द्वारकाधाम मनोहर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, त्रय दिशि परिखावत त्रय सागर।।

४४

सागर शोभा भारत धरणी।
श्रीरतनाकर महोदधि सागर, तरल तरंगे अति दुख हरणी।।
नाना जलचर किलोल परायन, चर्चित वहुविध यह भव तरणी।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सतत रहो शुभ सागर सरणी।।

४५

भारत में व्रजधाम निहार।
शोभित यमुना श्रीवृन्दावन, राधाकृष्ण नित करत विहार।।

मथुरापुरी गोवरधन राजा, बरसाना नंदगाँव निखार।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, गोकुल कामा दाउ वलिहार।।

४६

भारत में वृन्दावन दरशन।
श्रीव्रजभूमी परम मनोहर, अतिशय शोभित श्रीवृन्दावन।।
नित्य विराजत राधामाधव, श्रीवन वसुधा सुन्दर दरशन।
श्रीयमुना तट शुभ वंशीवट, निकट द्रुमावलि मंजुल कुंजन।।
शिखि-शुक-कोकिल-सुभग सारिका, वहुविध खगकुल कलरव गुंजन।
ललित प्रफुल्लित अभिनव पंकज, मधुकर गुंजन चित आकरसन।।
सरस सरोवर लति परिवेष्टित, विविध सुमन नव सुरभित श्रीवन।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, कुंज-कुंज नित विहरत सखिजन।।

४७

भारत शोभा अवधपुरी है।
सीताराम विराजत अनुपम, सरयू धारा बहत भरी है।।
श्रीहनुमान महाबलशाली, नाम उचारत विजत अरी है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, विहरत श्रीहरि प्रिय नगरी है।।

४८

भारत में लोहागर पुष्कर।
पाण्डुसुत श्रीभीमसेन की, लोहगदा विगलित लोहागर।।
पुष्कर तीरथ श्रीतीर्थगुरू है, ब्रह्मदेव का वास यहीं पर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, दान-मारजन फल अतिशयतर।।

४९

भारत शोभा मिथिला धाम।
जनक सुता श्रीचरण सुपावन, मिथिला धरणी सतत प्रणाम।।

महामनीषी शास्त्रविचिन्तक, भावुक श्रीमुख सीताराम।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सकल मनोरथ पूरण काम।।

(५०)

द्वादश ज्योतिर्लिंग महान।
दिव्यप्रभायुत भारत भू पर, शिव समलंकृत शिव वरदान।।
जिन शुभ दरशन पाकर भावुक, अति हरषित हो करैं सम्मान।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, ये शिव तीरथ शास्त्र प्रमान।।

(५१)

चित्रकूट चल दरशन सुन्दर।
कामदगिरिवर शोभा अनुपम, महामन्दाकिनि सरिता अघहर।।
हनुमतधारा फटिक शिला प्रिय, गुप्त गोदावरि बहत निरन्तर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, विहरत रसनिधि श्रीसियरघुवर।।

(५२)

व्रजमण्डल में श्रीगिरिराज।
जहाँ निरन्तर राधामाधव, विहरत नव नव सखी समाज।।
मंजुल मधुर मानसी गंगा, दरशन होत सब पूरण काज।
राधाकुंड अरु श्यामकुंड की, महिमा गावत रिषि-मुनि-राज।।
श्रीगोवरधन व्रज के राजा, निकट निम्बारक तप थल भ्राज।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भारत शोभा श्रीगिरिराज।।

(५३)

तीरथराजा विदित प्रयाग।
गंगा-यमुना-सुभग (गुपत) सरस्वती, महात्रिवेणी भारत भाग।।
महाकुंभ की पावन अवनी, साधुजन दरशन सन्त-विराग।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय जय बोलो भर अनुराग।।

५४

भारत शोभा गंगासागर।
दिव्य तपस्या हरि आराधन, लीन सदा श्रीकपिल मुनीश्वर।।
महासिन्धु की महा तरंगे, पावन करती निखिल पापहर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह तीरथ है परम मनोहर।।

५५

श्रीरंगम प्रभु दरशन चितहर।
दिव्य भव्य प्रिय श्रीवपुशोभा, दरशन कर अति प्रमुदित सुर-नर।।
भारत धरणी परम सुशोभित, विविध सुपावन तीरथ शुभकर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, तीरथ सेवन करैं भावधर।।

५६

भागीरथी श्रीहरिपद धारा।
प्रवहत भारत पुण्य अवनि पर, अविरल अनुपम रस संचारा।।
त्रिपथ गामीनि तापनिवारिणि, श्रीगंगा यश महिम अपारा।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय गंगा जय अविचल धारा।

५७

भारत तीरथ रूप महा है।
देव-वृन्द-मुनि पुनि-पुनि भारत, वसुन्धरा पर जन्म चहा है।।
अतिशय सुन्दर विविध तीर्थ जहँ, अति पावन यह दरश रहा है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, असीम अनुपम सुखावहा है।।

५८

महाकुंभ का भारतधाम।
प्रयागराज का कुंभ मनोहर, हरिद्वार शुभ कुंभ ललाम।।
अवन्तिका में कुंभ दरश कर, श्रीनासिक का कुंभ सुनाम।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीवृन्दावन कुंभ प्रणाम।।

(५९)

भारत अनुपम तीरथ शुभ घर।
परम सुपावन अभिनव शोभा, अवलोकत अघ जात भयंकर।।
जहँ अतिराजत विविध देव घर, सागर-सरिता-सुभग सरोवर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, वास करो तुम सब जीवन भर।।

(६०)

भारत तीरथ मंगल दरशन।
कभी न भूलो इन तीरथ को, अनुदिन सेवो निज जीवन धन।।
दीन भाव युत अभिनन्दन कर, जयति सदा जय आनद वरषन।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सकल सुतीरथ हिय मन भावन।।

भारतीयता—

(६१)

भारतवासी नित दान करो।
तन-मन-धन-बल-समय-वस्तु को, निज स्वारथ तज इनको वितरो।।
सद् विद्या अरु शास्त्र ज्ञान का, निरमल सात्विक सद्भाव भरो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अति दीन दुखी का कष्ट हरो।।

(६२)

भारतवासी अतीत महा है।
जिसमें गौरव सदा प्रतिष्ठित, परिपालन अनिवार्य रहा है।।
धर्महीन इस राजनीति में, सकल दृष्टि से गरल भरा है।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सुखद शान्ति में नेह बहा है।।

(६३)

भारतवासी सुविचार करो।
तुच्छ स्वार्थ में कभी न आवो, परमारथ कर भवसिन्धु तरो।।

श्रीहरि चिन्तन हरि गुण गावो, पलहु न इनको कबहु न विसरो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, भगति-भाव युत तीरथ विहरो।।

६४

भारत जन सब सतत विचारो।
सत्पथ पालन निरत सदा हो, मान इसी में चित न विसारो।।
अध्यात्म-भावना भावनिष्ठ हो, धर्म सनातन व्रत अवधारो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रुति-सत्पथ को नित्य निहारो।।

६५

भारत हित हम कर्तव्य करें।
मन-वाणी अरु शुद्ध कर्म से, देश-मान का नित ध्यान धरें।।
सद् गौरव को रख अन्तर में, अनर्थ कर्म से सतत डरें।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, असहाय जनों का कष्ट हरें।।

६६

भारत सम्पति श्रीगोमाता।
इसकी रक्षा समस्त विधि से, करैं सुजन अरु देश विधाता।।
यह अनुपम वरदान दायिनी, जस पय-दधि-घृत गुण बतलाता।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, गोसेवी हरि दरशन पाता।।

६७

भारत के सनमान हित, सेवा व्रत विधि जान।
'राधासर्वेश्वरशरण' निज जीवन सुख मान।।

६८

भारतवर्ष अखण्डता, रक्षा हित हो कार्य।
'राधासर्वेश्वरशरण' यह अतीव अनिवार्य।।

६६

संघटन करके रहो, सभी दृष्टि से आज।
राधासर्वेश्वरशरण' सुधरेगें सब काज।।

७०

परस्पर मिलकर रहो, करो देश हित काज।
'राधासर्वेश्वरशरण' यह है निज अधिराज।।

७१

सात्विक सादा वेष हो, सरल शान्ति सद भाव।
'राधासर्वेश्वरशरण' वह अभिवन्द्य स्वभाव।।

७२

मात-पिता-शिक्षक भले, जब शासक-कवि-सन्त।
'राधासर्वेश्वरशरण' तब हो सब गुणवन्त।।

७३

वैद्य कुशल वेदज्ञ द्विज, विद्यादान प्रवीन।
'राधासर्वेश्वरशरण' निश्चय हम स्वाधीन।।

७४

श्रीगुरुजन आज्ञा भली, नत मस्तक उरधार।
'राधासर्वेश्वरशरण' आप्त वचन श्रुतिसार।।

७५

श्रीसर्वेश्वर भजन कर, यही हो जीवन लक्ष्य।
'राधासर्वेश्वरशरण' तज दो सकल अभक्ष्य।।

(७६)

गोमाता विधिवत सदा, पूजनीय श्रुतिसार।
'राधासर्वेश्वरशरण' रक्षणीय चितधार।।

(७७)

पञ्चगव्य—

१ २ ३
पञ्चगव्य सेवन करो, गोमय-घृत-गोमूत्र।
४ ५
'राधासर्वेश्वरशरण' दधि-पय अनुपम सूत्र।।

(७८)

पंचामृत—

१ २ ३ ४
पञ्चामृत पावन सुभग, दधि-पय-घृत-मधु जान।
५
'राधासर्वेश्वरशरण' शक्कर युत कर पान।।

(७९)

मधुपर्क—

१ २ ३
स्वागत में मधुपर्क धर, दधि-घृत-मधु युत शुद्ध।
'राधासर्वेश्वरशरण' पीवत रुज अवरुद्ध।।

(८०)

श्रीतुलसी भवरोगहर, अतुलित महिमा जान।
'राधासर्वेश्वरशरण' प्रभु प्रसाद सनमान।।

८१

तुलसीदल गोविन्द के, अरपन हो पदकंज।
'राधासर्वेश्वरशरण' विपद हरै रुज भंज।।

८२

गोपीचन्दन कृष्ण का, सत्प्रसाद शिर धार।
'राधासर्वेश्वरशरण' प्रभाव अपरमपार।।

८३

शालगराम अभिषेक का, चरणामृत कर पान।
'राधासर्वेश्वरशरण' शास्त्र करत गुण गान।।

८४

गंगाजल शीतल पवित्र, निरमल हरिपद वारि।
'राधासर्वेश्वरशरण' सेवो वह अनिवारि।।

८५

धात्री फल अरपन करै, ब्रह्मा सदा प्रसन्न।
'राधासर्वेश्वरशरण' अरोग रहे प्रपन्न।।

८६

विल्वपत्र शंकर सदा, अतिप्रिय हरषित जान।
'राधासर्वेश्वरशरण' दाता शिव वरदान।।

८७

सकलरोगहर निम्ब है, आयुर्वेद प्रमान।
'राधासर्वेश्वरशरण' महिमा परम महान।।

८८

वट-पीपल-कदली-कदम्ब, शमी-आम तरु कुंज।
'राधासर्वेश्वरशरण' जम्बू-श्रीफल पुंज।।

८६

सीताफल-गुंजा-वकुल, शुभतरु सुखद अशोक।
'राधासर्वेश्वरशरण' विदित सदा भव-लोक।।

६०

सुरभित-चन्दन उभय शुभ, वैजयन्ती फल माल।
'राधासर्वेश्वरशरण' मंजुल कमल मृणाल।।

६१

दया-दीनता-सरलता, समता-पर उपकार।
'राधासर्वेश्वरशरण' मानव मन अवधार।।

६२

संस्कृत का अवबोध हो, सदाचार अनुपाल।
'राधासर्वेश्वरशरण' जीवन होत निहाल।।

६३

हिन्दी भाषा सरल है, व्यापक शुद्ध स्वरूप।
'राधासर्वेश्वरशरण' शुभ संस्कृत अनुरूप।।

६४

भारत जनता को सतत, हो हिन्दी परिज्ञान।
'राधासर्वेश्वरशरण' निश्चय उनका मान।।

६५

दानशील संयम निरत, भज माधव मतिमान।
'राधासर्वेश्वरशरण' करहु अतिथि सनमान।।

६६

संयत-मन प्रभु ध्यान कर, प्रतिदिन प्राणायाम।
'राधासर्वेश्वरशरण' योगासन-व्यायाम।।

९७

ब्रह्मचर्य पालन करै, श्रेष्ठ शास्त्र स्वाध्याय।
'राधासर्वेश्वरशरण' जग चिन्तन विसराय।।

९८

हरिभक्तों का संग हो, दुष्ट संग का त्याग।
'राधासर्वेश्वरशरण' तब ही प्रभु अनुराग।।

९९

आयुर्वेद जगत का, करता अति उपकार।
'राधासर्वेश्वरशरण' सकल रोग परिहार।।

१००

भारत की यह सम्पदा, ज्योतिष शास्त्र महान्
'राधासर्वेश्वरशरण' भाग्य विधान प्रधान।।

१०१

श्रीहरि मन्दिर इष्ट-गृह, रक्षा अति अनिवार्य।
'राधासर्वेश्वरशरण' प्रजा-राज निज कार्य।।

१०२

सत्य वचन वाणी मधुर, मिथ्या का परित्याग।
'राधासर्वेश्वरशरण' सर्वेश्वर अनुराग।।

१०३

तस्करता का त्याग कर, हिंसा नित्य निवार।
'राधासर्वेश्वरशरण' भ्रष्टाचार विसार।।

१०४

मद्यादि सेवन अवैध, चलचित्रों का त्याग।
'राधासर्वेश्वरशरण' हो दुष्कर्म-विराग।।

१०५

आमिष-भोजन अभक्ष्य है, धूम्रपान दुख मूल।
'राधासर्वेश्वरशरण' तज दो मत कर भूल।।

१०६

सुन्दर वन तरु सम्पदा, सब विधि रक्षण हेतु।
'राधासर्वेश्वरशरण' राजधर्म यह सेतु।।

१०७

विहग-मृगादि विविध जीव, रक्षा हित अनिवार्य।
'राधासर्वेश्वरशरण' सर्वकार यह कार्य।।

१०८

अति घातक संहारकर, अणु-बम आदिक अस्त्र।
'राधासर्वेश्वरशरण' विनिषेध हों सब शस्त्र।।

१०६

श्रीगंगादिक सरित शुचि, रक्षण हित यह कार्य।
'राधासर्वेश्वरशरण' अनुशासक अनिवार्य।।

११०

सन्ध्यावन्दन नित्यकर्म, प्रतिदिन हो प्रभु ध्यान।
'राधासर्वेश्वरशरण' निश्चय जन-कल्यान।।

१११

प्रभु अरपित परसाद है, सेवन कर सुखमान।
'राधासर्वेश्वरशरण' तुलसीयुत कर दान।।

११२

कपट-कृपणता-स्वार्थ-धन, तज अन्तर अभिमान।
'राधासर्वेश्वरशरण' कर शिक्षा हित दान।।

(११३)

समर कुशल अतिशय प्रसिद्ध, योद्धा भारत वीर।
'राधासर्वेश्वरशरण' कभी न होत अधीर।।

(११४)

भारत ललना पतिव्रता, व्रत सेवा तल्लीन।
'राधासर्वेश्वरशरण' श्रीहरिभक्ति प्रवीन।।

(११५)

सद-गुरु सेवा भाव युत, होकर करै सदैव।
'राधासर्वेश्वरशरण' वैभव मिलै तदैव।।

(११६)

षड्‌रिपु—

१ २ ३ ४ ५ ६
काम-क्रोध जब लोभ-मोह, मद-मात्सर्य निवार।
'राधासर्वेश्वरशरण' तब आनन्द विहार।।

(११७)

षड्-दर्शन—

१ २
षड् दर्शन का बोध कर, सांख्य-योग चित धार।
३
'राधासर्वेश्वरशरण' वैशेषिक संचार।।

(११८)

४ ५
तर्करूप यह न्याय है, पुनि मीमांसा जान।
६
'राधासर्वेश्वरशरण' अथ वेदान्त विधान।।

पंचार्थ ज्ञान—

(११९)

१ २ ३ ४
उपास्य-उपासक-कृपाफल, -भक्तिरस परिबोध।
५
'राधासर्वेश्वरशरण' रूप विरोधी शोध।।

पञ्चक्लेश—

(१२०)

१ २ ३ ४
अविद्या एवं अस्मिता, -राग-द्वेष व्यवधान।
५
'राधासर्वेश्वरशरण' अभिनिवेश अवधान।।

(१२१)

प्रतिदिन पञ्चमहायज्ञ, वरणित शास्त्र विधान।
'राधासर्वेश्वरशरण' सेवो सद विज्ञान।।

(१२२)

पञ्चमहायज्ञ—

१ २ ३ ४
ब्रह्मयज्ञ-तर्पण-हवन, अतिथि-सेवा ज्ञान।
५
'राधासर्वेश्वरशरण' वलिवैश्वदेव कर दान।।

(१२३)

पञ्चमहाभूत—

१ २ ३ ४ ५
वसुधा-जल-पावक-पवन, -ख-पञ्चक महाभूत।
'राधासर्वेश्वरशरण' पञ्चीकृत-अनुस्यूत।।

(१२४)

त्रिगुणात्मक जगत्—

१ २ ३
सत्व-रज-तम ओत-प्रोत, त्रिगुणात्मक संसार।
'राधासर्वेश्वरशरण' हरि स्मरण निस्तार।।

(१२५)

पञ्चग्रास—

१ २ ३ ४ ५
गोमाता अरु श्वान-काक, अतिथि-कीटपतंग।
'राधासर्वेश्वरशरण' पञ्चग्रास हो संग।।

१२६

पञ्च पल्लव

आम-जामुन-वट-पीपल, गूलर पञ्चम श्रेष्ठ।
'राधासर्वेश्वरशरण' पञ्चपल्लव प्रेष्ठ।।

वैष्णव-पञ्चसंस्कार—

१२७

१ २ ३
तिलक भाल भुज शंख-चक्र, तुलसी-कंठी धार।
४ ५
'राधासर्वेश्वरशरण' नाम-मंत्र-संस्कार।।

१२८

धर्म के दश-लक्षण—

१ २ ३ ४ ५
धृति-क्षमा-दम-अस्तेय, शुचिता का परिज्ञान।
६
'राधासर्वेश्वरशरण' इन्द्रियनिग्रह जान।।

१२६

७ ८ ६ १०
धी-विद्या अथ सत्य वच, जीवनहित अक्रोध।
'राधासर्वेश्वरशरण' दशविध धर्म प्रबोध।।

१३०

उपासना—

राम-कृष्ण प्रभु एक हैं, भेद-कल्पना व्यर्थ।
'राधासर्वेश्वरशरण' चरित-भेद है अर्थ।।

१३१

राधामाधव आराधन, जीवन उत्तम ध्येय।।
'राधासर्वेश्वरशरण' सार यही अभिगेय।।

१३२

महाबली हनुमान का, श्रद्धायुत कर ध्यान।
'राधासर्वेश्वरशरण' रामकृपा ध्रुव मान।।

१३३

ब्रह्मा-विष्णु-शिव प्रतिपल, करते जगत विधान।
'राधासर्वेश्वरशरण' इन पूजो धर ध्यान।।

१३४

गौरी-गणपति वन्दना, कर आराधन भानु।
'राधासर्वेश्वरशरण' सुखद भजन कृशानु।।

१३५

मांगलिक पुरातन वाद्य—

माधव मुरली मधुरतम, रस वरषाती नित्य।
'राधासर्वेश्वरशरण' भारत भाग्य अचिन्त्य।।

१३६

नारद-वीणा अनवरत, करती जग हित लाभ।
'राधासर्वेश्वरशरण' दरशन अनुपम आभ।।

(१३७)

अनुपम घोष मृदंग का, मोहत मधुर मजीर।
'राधासर्वेश्वरशरण' तुरयी करत अधीर।।

(१३८)

सोहत ढोलक-ढोल-ढफ,-नरसिंहा कलनाद।
'राधासर्वेश्वरशरण' भेरी-शंख निनाद।।

(१३९)

सारंगी शुभ शान्त स्वर, सुन्दर दिव्य सितार।
'राधासर्वेश्वरशरण' तानपुरा बलिहार।।

(१४०)

विशेष मननीय—

श्रीहरि गाथा श्रवणपुट, मुख हरिनाम उचार।
'राधासर्वेश्वरशरण' कलियुग कीर्तन सार।।

(१४१)

चित्त वेग अति प्रबल है, इसका जब अवरोध।
'राधासर्वेश्वरशरण' तब श्रीभगवद-बोध।।

(१४२)

भारत-संस्कृति शिर-शिखा, अस अविचल प्रतिपाल।
'राधासर्वेश्वरशरण' जीवन परम निहाल।।

(१४३)

दुर्घटना नित दारुण दृश्य, हो वह तब ही शान्त।
'राधासर्वेश्वरशरण' तज जब स्वारथ-ध्वान्त।।

(१४४)

भारत-कल्पतरु—

सादर भारत अभिनन्दन, निखिल तीर्थ आधार।।
'राधासर्वेश्वरशरण' अस अतिदृढ़ प्राकार।।

(१४५)

विश्वविदित है यह भारत, सकल राष्ट्र शिरमोर।
'राधासर्वेश्वरशरण' वन्दनीय निशिभोर।।

(१४६)

रहे विश्व सुख-शान्तिमय, भारत शुभ सिद्धान्त।
'राधासर्वेश्वरशरण' कर्मनिरत निर्भ्रान्त।।

(१४७)

भारतवर्ष महान है, दिव्य कल्पतरु रूप।
'राधासर्वेश्वरशरण' निखिलदेशप्रिय-भूप।।

विशेष अवधारणीय-

(१४८)

चतुर्वेद—

१ २ ३ ४
ऋग्-यजु-साम-अथवर्ण, चतुर्वेद जग वास।
'राधासर्वेश्वरशरण' प्रकट प्रभू निःश्वास।।

१४६

वेद के षट्-अंग—

१ २ ३ ४ ५
शिक्षा-कल्प व्याकरण, निरुक्त-छन्द श्रुति-अंग।
६
'राधासर्वेश्वरशरण' ज्योतिष भविष अभंग।।

१५०

त्रिविध ब्रह्म स्वरूप—

१ २ ३
भोग्य-नियन्ता-भोक्ता, त्रिविध-ब्रह्म कर ज्ञान।
१ २ ३
'राधासर्वेश्वरशरण' जीव जगत्-प्रभु जान।।

१५१

प्रस्थानत्रयी ज्ञान—

१ २ ३
ब्रह्मसूत्र-गीता विदित, उपनिषदों का बोध।
'राधासर्वेश्वरशरण' अनुशीलन-अनुरोध।।

१५२

विविध-स्मृति-शास्त्र—,

१ २ ३ ४ ५ ६
याज्ञवल्क्य-मनु-पाराशर, विष्णु-वाराह-व्यास।
'राधासर्वेश्वरशरण' स्मृति विधि सम्यक् वास।।

(१५३)

७ ८ ९ १० ११ १२

अत्रि-अगिंरा-कात्यायन, वशिष्ठ-दक्ष-हारीत।
'राधासर्वेश्वरशरण' बहु स्मृति नियम प्रगीत।।

(१५४)

नानाविध रामायण—

१

आदि रामायण प्रसिद्ध, मूल नाम संचार।

२

'राधासर्वेश्वरशरण' वाल्मीकि अवधार।।

(१५५)

३ ४ ५

अध्यात्म-अद्‌भुत अमृतमय, रामायण आनन्द।
'राधासर्वेश्वरशरण' वहुविध हैं सुखकन्द।।

(१५६)

अष्टादश पुराण—

१ २ ३ ४ ५ ६

ब्रह्म-पद्‌म-श्रीविष्णु-शिव, भागवत-नारद जान।

७

'राधासर्वेश्वरशरण' मार्कण्डेय पुरान।।

(१५७)

८ ९ १० ११ १२
अग्नि-भविष्य-ब्रह्मवैवर्त, लिंग-वराह पुरान।
१३ १४
'राधासर्वेश्वरशरण' स्कन्द-वामन विधान।।

(१५८)

१५ १६ १७ १८
कूर्म-मत्स्य-गरुड़ प्रसिद्ध, अथ ब्रह्माण्ड पुरान।
'राधासर्वेश्वरशरण' अष्टादश परमान।

(१५९)

उप-पुराण है अष्टादश, जिनमें हरिगुण गान।
'राधासर्वेश्वरशरण' प्रतिपादित है ज्ञान।।

(१६०)

इतर उपोप-पुराण भी, अष्टादश अवबोध।
'राधासर्वेश्वरशरण' ज्ञान विधान विशोध।।

(१६१)

श्रीमद्भागवत—

सब पुराण में भागवत, महापुराण विख्यात।
'राधासर्वेश्वरशरण' कृष्ण चरित प्रख्यात।।

(१६२)

अष्टादश-पुराण पुंज, कर्ता वेदव्यास।
'राधासर्वेश्वरशरण' भगवत चरित विकास।।

(१६३)

महाभारत—

महाभारत सद्ग्रन्थ है, व्यासकृत पंचम-वेद।
'राधासर्वेश्वरशरण' अतुलित ज्ञान-विभेद।।

(१६४)

श्रीमद्भगवद्-गीता—

भगवद्-गीता दिव्य है, श्रीकृष्ण उपदेश।
'राधासर्वेश्वरशरण' अर्जुन को सन्देश।।

(१६५)

प्रसिद्ध **"नारद पञ्चरात्र"**, तन्त्र-ग्रन्थ प्राचीन।
राधा सर्वेश्वर शरण, कृति नारद-कर-वीन।।

(१६६)

श्रीरामचरितमानस—

रामचरितमानस महा, तुलसीकृत वृहदिन्दु।
'राधासर्वेश्वरशरण' पीवो अमृत बिन्दु।।

(१६७)

भारत महत्व—

भारत है सब शास्त्र का, एकमात्र यह कोष।
'राधासर्वेश्वरशरण' विद्वज्जन परितोष।।

(१६८)

भारत के ऋषि-मुनीश्वर, करते हैं स्वाध्याय।
'राधासर्वेश्वरशरण' सुधीजनोपाध्याय।।

(१६९)

भारत है सब देश का मुकुटमणि-शिरमोर।
'राधासर्वेश्वरशरण' विदेश भाव विभोर।।

(१७०)

भारत पातक-भार का, हर्ता है अविलम्ब।
'राधासर्वेश्वरशरण' उक्ति शास्त्र-कदम्ब।।

(१७१)

सकल विश्व में शान्ति हो, भारत का आदर्श।
'राधासर्वेश्वरशरण' यही महा उत्कर्ष।।

(१७२)

जय जय बोल जय भारत, जीवन करो निहाल।
'राधासर्वेश्वरशरण' मन हो परम विशाल।।

(१७३)

शरणागत स्वागत सदा, भारत करता मान।
'राधासर्वेश्वरशरण' वितरत बहुविध दान।।

(१७४)

पुनि-पुनि हम वन्दन करें, भारत वसुधा शुद्ध।
'राधासर्वेश्वरशरण' विरुद्ध वृत्ति निरुद्ध।।

(१७५)

षार्थ चतुष्टय—

१ २ ३ ४
धर्म-अर्थ व काम-मोक्ष, परम पुरुषार्थ चार।
'राधासर्वेश्वरशरण' जीवन लक्ष्य विचार ।।

१७६

स्वरूप चतुष्टय–

१ २ ३ ४
नाम-रूप-लीला ललित, श्रीहरि चिन्मय धाम।
'राधासर्वेश्वरशरण' चिन्तन हो अविराम।।

१७७

नवधा भक्ति–

१ २ ३ ४
श्रवण-कीर्तन-हरिस्मरण, पदसेवा अवधार।
५ ६
'राधासर्वेश्वरशरण' अर्चन-वन्दन सार।।

१७८

७ ८ ६
दास्य-सख्य अथ स्व-अर्पण, नवधा भक्ति महान।
'राधासर्वेश्वरशरण' सेवन हो धर ध्यान।।

१७६

योग दर्शन–

पातञ्जल योग दर्शन, महिमा अमित अपार।
'राधासर्वेश्वरशरण' विदित सकल संसार।।

(१८०)

द्वि-विद्यात्मक-योग—

१ २

योग द्विविध स्वरूप है, राजयोग-हठयोग।
'राधासर्वेश्वरशरण' फलप्रद योग-प्रयोग।।

(१८१)

राजयोग में हरि-चिन्तन, होवत परम-समाधि।
'राधासर्वेश्वरशरण' नशत निलिख भवव्याधि।।

(१८२)

हठयोग नित साधन तैं, देह सुखी मन स्वस्थ।
'राधासर्वेश्वरशरण' जगत मोह अपदस्थ।।

अष्टांग-योग—

(१८३)

१ २ ३ ४

परिपालन हो यम-नियम, आसन-प्राणायाम।

५

'राधासर्वेश्वरशरण' प्रत्याहार अकाम।।

(१८४)

६ ७ ८

धारणा सुन्दर ध्यान हो, समाधि ब्रह्म सुयोग।
'राधासर्वेश्वरशरण' विदित अष्टांगयोग।।

१८५

विधिवत जानो परिभाषा, कथित अष्टांगयोग।
'राधासर्वेश्वरशरण' प्रतिदिन करैं प्रयोग।।

१८६

१ २ ३ ४
अहिंसा-सत्य-अस्तेय, ब्रह्मचर्य परिज्ञान।
५
'राधासर्वेश्वरशरण' अपरिग्रह यम जान।।

१८७

१ २ ३ ४
शौच-सन्तोष-तप साधन, हो स्वाध्याय विधान।
'राधासर्वेश्वरशरण' **नियम** ईश-प्रणिधान।।

१८८

स्थिरसुख **आसन** विदित हो, पूरक **प्राणायाम**।
२ ३
'राधासर्वेश्वरशरण' कुम्भक-रेचक नाम।।

१८९

एकादश-इन्द्रिय निरोध, **प्रत्याहार** विधान।
'राधासर्वेश्वरशरण' योग-शास्त्र विज्ञान।।

१९०

चित्त विनिग्रह **धारणा**, होवे जीवन शुद्ध।
'राधासर्वेश्वरशरण' सब विरुद्ध अवरुद्ध।।

१६१

ईश ज्ञान विधिवत यदा, चिन्तन हो अविराम।
'राधासर्वेश्वरशरण' तदा **ध्यान** परिणाम।।

१६२

अहं भाव को त्याग कर, हो सर्वेश्वर ध्यान।
'राधासर्वेश्वरशरण' अखण्ड **समाधि** जान।।

हठयोग-षट्कर्म—

१६३

१ २ ३ ४ ५
नेति-धौति-वस्ति विधान, गजकर्म-न्योलि जान।
'राधासर्वेश्वरशरण' षट्कर्म त्राटक मान।।

चौरासी (८४) योगासन—

१६४

योगासन चौरासी है, हर्ता नाना रोग।
'राधासर्वेश्वरशरण' करैं सदा सद्-लोग।।

१६५

१ २ ३
सिद्ध-प्रसिद्धसिद्धासन, पद्मासन अववेद।
'राधासर्वेश्वरशरण' बद्ध-सुप्तादि विभेद।।

१६६

४ ५ ६ ७

भद्र-स्वस्तिक-योगासन, प्राणासन को जान।

८

'राधासर्वेश्वरशरण' मुक्तासन कर ध्यान।।

१६७

६ १०

पवनमुक्तासन प्रसिद्ध, सूर्यासन अति लाभ।

११

'राधासर्वेश्वरशरण' सूर्यभेद शुभ आभ।।

१६८

१२ १३

भस्त्रिकासन है ज्वर हर, सावित्रीसमाधि ओर।

१४

'राधासर्वेश्वरशरण' अचिन्तनीय कर भोर।।

१६६

१५ १६

ब्रह्मज्वरांकुश व्याधिहर, उद्धारक बल कोष।

'राधासर्वेश्वरशरण' हर्ता है सब दोष।।

२००

१७ १८ १६

मृत्युभञ्जक वातहर, भैरव-आत्माराम।

२०

'राधासर्वेश्वरशरण' गरुडासन भज श्याम।।

(२०१)

२१ २२ २३
गोमुख-वातायन करो, नेति आसन जान।
२४
'राधासर्वेश्वरशरण' पूर्वासन पहिचान।।

(२०२)

२५ २६
आसन सिद्धमुक्तावली, महामुद्रा क्षय जान।
२७
'राधासर्वेश्वरशरण' वज्रासन सुख मान।।

(२०३)

२८ २६
पश्चिमोत्तानासन हो, पूर्वोत्तान प्रयास।
३०
'राधासर्वेश्वरशरण' शीर्षासन अभ्यास।।

(२०४)

३१ ३२
हस्ताधार-शीर्षासन, गर्भासन साधार।
'राधासर्वेश्वरशरण' आसन विविध प्रकार।।

(२०५)

३३ ३४
ऊर्ध्व-सर्वांगासन है, पादागुंष्ठ प्रकार।
३५
'राधासर्वेश्वरशरण' उत्तानपाद प्रचार।।

(२०६)

३६

जानुलग्नहस्त-आसन, करता उदर विशुद्ध।
'राधासर्वेश्वरशरण' नाना रोग निरुद्ध।।

(२०७)

३७ ३८

एकपाद-शिरासन करैं, द्विपाद-शिरासन ज्ञान।
'राधासर्वेश्वरशरण' रोग निवारत आन।।

(२०८)

३९ ४०

एकहस्त व पादहस्त, आसन अनुपम देख।
'राधासर्वेश्वरशरण' पढ़ो योग-आलेख।।

(२०९)

४१ ४२

कर्णपीडमूलासन है, कोणासन अवबोध।
४३
'राधासर्वेश्वरशरण' त्रिकोणासन अविरोध।।

(२१०)

४४ ४५ ४६

चतुष्कोण व कन्दपीड, तुलितासन संचार।
४७
'राधासर्वेश्वरशरण' तालासन अवधार।।

(२११)

४८ ४६
धनुरासन से वीरता, वियोगासन कर धीर।
'राधासर्वेश्वरशरण' छूटे निज तन पीर।।

(२१२)

५० ५१ ५२ ५३ ५४
विलोम-उत्कट-शोकासन, संकट-अन्ध अनेक।
५५ ५६ ५७
'राधासर्वेश्वरशरण' वृष-शव-रुण्ड विवेक।।

(२१३)

५८ ५६ ६० ६१ ६२
गोपुच्छ-उष्ट्र व मर्कट, मत्स्य-मत्स्येन्द्र शुद्ध।
६३
'राधासर्वेश्वरशरण' मकरासन परिबुद्ध।।

(२१४)

६४ ६५ ६६
कच्छप-मण्डूक-उत्तान,-मण्डूकासन जान।
६७ ६८
'राधासर्वेश्वरशरण' हंस-बकासन मान।।

(२१५)

६६ ७० ७१ ७२ ७३
मयूर-कुक्कुट-शलभासन, वृश्चिक-भुजंग योग।
७४
'राधासर्वेश्वरशरण' हलासन करै निरोग।।

(२१६)

७५ ७६ ७७
उड्डियान-योगमुद्रा, ध्रुवासन जगत प्रसिद्ध।
७८
'राधासर्वेश्वरशरण' मृगासन अनुपम सिद्ध।।

(२१७)

७६ ८० ८१
पर्वत-शान्तिप्रियासन, चक्रासन हो नित्य।
८२
'राधासर्वेश्वरशरण' दोलासन सादित्य।।

(२१८)

८३ ८४
संकोच-यानासन है, योगशास्त्र निर्दिष्ट।
'राधासर्वेश्वरशरण' आसन सकल विशिष्ट।।

कर्त्तव्य-विधान—

(२१६)

गौरव-गरिमा देश की, रक्षा हित बलिदान।
'राधासर्वेश्वरशरण' करो सकल मतिमान।।

(२२०)

तन, मन, धन वैभव सकल, देश हित अर्पण प्राण।
'राधासर्वेश्वरशरण' करैं सर्वेश्वर त्राण।।

(२२१)

हो देश की सेवा में, अपना निर्मल चित्त।
'राधासर्वेश्वरशरण' पावे सात्विक वित्त।।

(२२२)

कलह-भावना अहितकर, हो परस्पर प्रेम।
‘राधासर्वेश्वरशरण’ करो यही दृढ़ नेम।।

(२२३)

स्वार्थपरता समूल तज, करो सदा सद्भाव।
‘राधासर्वेश्वरशरण’ हो मन सुभग स्वभाव।।

(२२४)

श्रीसर्वेश्वर-भजन हो, प्रतिपल उनका ध्यान।
‘राधासर्वेश्वरशरण’ शुभ कर्तव्य विधान।।

(२२५)

यह है ‘भारत-कल्पतरु’, वितरत पुष्प-पराग।
‘राधासर्वेश्वरशरण’ हो भारत अनुराग।।

२२६

जो जन “भारत कल्पतरु”, करले छाय विश्राम।
‘राधासर्वेश्वरशरण’ सुख पावत अविराम।।



देश–निष्ठा

भारत का हम गुणगान करैं, दिनरात इसी का ध्यान धरैं।
श्रद्धायुत नित अनुराग भरैं, अविरल अस हित शुभ याग वरैं।।
निखिल मनुज के तन-मन में हो, भाव सुभग शुभ प्रतिजन में हो।
उत्तम जीवन लक्ष्य यही हो, सरवस अरपन विनति सही हो।।
सुन्दर पावन जीवन धन है, गावत भारत-यश सुर-गन है।
अद्भुत अनुपम छवि दरशन है, पाकर हरषित मुनिवर जन है।।
पुलकित होकर जय-जय करते, सतत विजय हित भाव उभरते।
भारत भू पर सन्त विचरते, दरश मनोहर जन मन हरते।।
निज मानस हो हरि सुमिरण में, देशधरा के अभिरक्षण में।
जब अभिधावत नेह गगन में, तब ही अति सुख पावत मन में।।
अनन्य निष्ठा दैन्य हृदय भर, देश भावना सेवा नित कर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अतुलित वैभव मिलै निरन्तर।।

हिन्दु–संस्कृति का औदार्य–

हिन्दू-संस्कृति सर्वदा, करती सब का मान।
'राधासर्वेश्वरशरण' लक्ष्य यही कर ध्यान।।

प्राणी-मात्र रहे कुशल, रहे समस्त निरोग।
'राधासर्वेश्वरशरण' पावे शुभमति-योग।।



जयतु भारतम्   जयतु भारतम्

जयतु भारत-संस्कृतिः

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की जय हो

भारतवर्ष की विजय हो

संस्कृत भाषा का प्रचार हो

श्रीभगवद्‌गीता का स्वाध्याय हो

अध्यात्म विद्या का सञ्चार हो

श्रुतिशास्त्रोक्तज्ञान का प्रसार हो

मानवता का ज्ञान हो

गंगाजल का पान हो

गो माता की जय हो

देवालयों की सुरक्षा हो

विभिन्न प्रदूषण का निवारण हो



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ‘श्रीजी’ महाराज

द्वारा विरचित ग्रन्थ-माला

क्र.	ग्रन्थ	विधा		श्लोक संख्या
१.	श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत “प्रातः स्तवराज” पर ‘युगलतत्त्वप्रकाशिका’ नामक व्याख्या।			
२.	श्रीयुगलगीतिशतकम्	(संस्कृत-पद्यात्मक)	प्रकाशित	११८
३.	उपदेश-दर्शन	(हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४.	श्रीसर्वेश्वर सुधा-बिन्दु (पद सं० १०८)		,,	
५.	श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः	(संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३८२
६.	श्रीराधामाधवशतकम्	,,	,,	१०५
७.	श्रीनिकुञ्ज-सौरभम्	,,	,,	
८.	हिन्दु संघटन	(हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९.	भारत-भारती-वैभवम्	(संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३५
१०.	श्रीयुगलस्तवविंशतिः	,,	,,	१८६
११.	श्रीजानकीवल्लभस्तवः	,,	,,	४०
१२.	श्रीहनुमन्महाष्टकम्	,,	,,	२२
१३.	श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्	,,	,,	१५
१४.	भारत-कल्पतरु (पद सं० १४६)		,,	
१५.	श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्		,,	६५
१६.	विवेक-वल्ली (दोहा सं. ४०६)		,,	
१७.	नवनीतसुधा	(संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
१८.	श्रीसर्वेश्वरशतकम्।	(संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०८
१९.	श्रीराधाशतकम्	(संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३
२०.	श्रीनिम्बार्कचरितम्	(संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
२१.	श्रीवृन्दावनसौरभम्	(संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६०
२२.	श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी (पद सं. ६४-दोहा सं. २०)		,,	
२३.	श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्	(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक पद सं.२०)	,,	१०
२४.	छात्र-विवेक-दर्शन	(हिन्दी-पद्यात्मक दोहा पद सं. २४१)	,,	
	कुल संस्कृत श्लोक संख्या			१४०७

मुद्रक - श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)